ऐसे मनायें दीपावली

दीपावली की तैयारी हम कई दिन पूर्व से ही करते हैं। जैसे कि घर की साफ सफाई करना, घर की दीवारों को पेंट करना, घर के लिए नया सामान और नये कपड़े खरीदना आदि। इसका मतलब ये है कि दीपावली के बाद हम जैसे कि एक नये युग में प्रवेश करते हैं, जहाँ सबकुछ नया ही नया है। नवीनता को जीवन में अपनाना मनुष्य का स्वभाव है। पर सोचने की बात है कि दीपावली हो जाने के बाद सब चीज़ें तो नई हो गईं, परन्तु क्या हमारे रहन-सहन में, व्यवहार में या सोच में नयापन रहता है? यदि नहीं, तो फिर वही का वही दफ्तर, दोस्त, कर्मक्षेत्र। तब तो भला दीपावली के पूर्व में हमने जो नया किया, वो तो केवल रीति रस्म ही निभाई। इससे हमारे जीवन में कोई बदलाव नहीं आया। विचार करने की बात ये है कि ये सब इतनी सारी तैयारियां करने के बाद भी हमारे जीवन की चाल चलन वैसी की वैसी है, तो फिर तो हमने बस अच्छे अच्छे खाद्य पदार्थ का सेवन किया, नये कपड़े पहने, लेकिन हमारे सोचने का ढंग तो पुराना ही रह गया।

दीपावली के दिन विशेष तौर पर दीया जलाते हैं। माना कि रोशनी से चारो ओर हमारा घर रोशनदान बन जाता है। चारो तरफ रोशनी ही रोशनी नज़र आती है। जहां रोशनी है, वहां उमंग उत्साह का संचार होता रहता है। तो हमारे जीवन में भी तो रोशनी सदा बनी रहनी चाहिए ना। लेकिन अधिकांशतः ऐसा देखा नहीं गया है। दीप को दीया भी कहते हैं। दीया माना ही देना, जो कि देवत्व का लक्षण है। किसी के प्रति शुभ भावना रखना, शुभ कामना करना, आगे बढ़ें, उनका जीवन सुखदायी हो, ये हुआ देना। और यही लक्षण है देवताओं का। जब हम ऐसी भावनाओं,

- ब्र.कु. गंगाधर

ऐसी समझ व ज्ञान से अपने जीवन को रोशन बनाये रखेंगे, तब ही हमारा जीवन भी सबके लिए रोशनदान की तरह होगा। तो दीपावली में आत्मदीप के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए उसकी वास्तविकता को समझना ज़रूरी है।

वैसे देखा जाये तो सभी को जीवन में सात बातों की आवश्यकता बनी रहती है। हर मज़हब, हर जाति को इन सात बातों की आवश्यकता जीवन में पड़ती है। पर मज़े की बात तो ये है कि जिसके लिए हम सारा दिन दौड़ भाग कर रहे हैं, वो हमारे पास पहले से ही मौजूद है। जब हमको परमात्मा ने इस धरा पर भेजा, तो सातों खज़ाने प्रचुर मात्रा में सबको एक समान दिये। वह है सुख, शांति, प्रेम, आनंद, ज्ञान, शक्ति, पवित्रता। हर कोई इसी को प्राप्त करने के लिए तो सुबह से शाम तक दौड़ रहा है, भाग रहा है। ये सत्व गुणों का खज़ाना आत्मा में मौजूद है। तभी तो आत्मा को सत् चित् आनंद स्वरूप कहते हैं। सत् माना जो सातों गुणों का व्यवहार में उपयोग करता है, वही सत् चित् आनंद स्वरूप में रह सकता है। इसमें से एक भी गुण की कमी है तो हम जीवन में खुशी व उमंग उत्साह में नहीं रह सकते। अगर सातों गुण हमारे जीवन में झलकता है, पनपता है, तभी तो आत्मदीप जगा हुआ कहेंगे ना। नहीं तो कभी अशांति, कभी दुःख, कभी उदासी के अंधकार में ही हम जीवन को काटते रहेंगे। अब प्रश्न उठता है कि ये सातों गुण कैसे हमारे जीवन में निरंतर प्रवाहित हों? वर्तमान समय हमारा जीवन इन उलझनों के मध्य फँसा हुआ है कि हम चाहते तो हैं कि हमारे जीवन में शांति हो, खुशहाली हो, पर इतनी मेहनत करने के बाद भी ऐसा हो नहीं पा रहा है। सुबह से रात तक जिसे प्राप्त करना चाहते हैं, वो हमारे से और ही दूर होता चला जाता है। पर हम विचार करें कि हम जिस पद्धति से जी रहे हैं, उसमें बदलाव तो करना ही होगा, अन्यथा तो इस कुचक्र से कैसे छुटकारा मिलेगा? तो अभी एक काम इस दीपावली के शुभ मौके पर करके देखें कि हमारा जीवन सुबह से शाम तक कैसे चल रहा है, उसमें हम बदलाव करें। कहते हैं जिसकी सुबह अच्छी, उसकी शाम अच्छी, उसका दिन अच्छा, उसका मास अच्छा, उसका वर्ष अच्छा और उसका जीवन ही अच्छा। इसके लिए बस सुबह की शुरुआत हम अपनी शक्तियों को, अपनी योग्यताओं को, अपनी संभावनाओं को, विशेषताओं को शांति से बैठकर अपने में देखें। फिर दिन की शुरुआत करें। साथ ही साथ परमात्मा की शक्तियों को अपने जीवन में स्थान दें। तब हमारे जीवन में हम ऊर्जा महसूस करेंगे और सबके प्रति देने का दीया जलता रहेगा। और जो देंगे, वही तो हमें मिलेगा ना। कहते हैं ना, जो देते हैं, वही लौटकर आपके पास आता है। आपने सबके प्रति शुभ भावनायें, शुभ कामनायें की, तो आपको वो दस गुना बनकर वापिस मिलेंगी। जैसे एक बीज अगर हम ज़मीन में बोते हैं, तो सैकड़ों बीज उससे निकलते हैं ना। इसी तरह हम भी इस दीपावली पर एक नया प्रयोग कर जीवन जीना आरंभ करें। हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आपका जीवन सदा ही ज्ञान, गुण, शक्तियों से रोशन होता रहेगा। ना सिर्फ आपका जीवन रोशन होगा, बल्कि आप दूसरे को भी एक आदर्श के रूप में रोशनी देते रहेंगे। ठीक है ना। ये तो कर सकते हैं ना। ये दीपावली सिर्फ पटाखे या स्थूल मोमबत्ती जलाकर ही मनायेंगे क्या कि दीपावली गयी और आपके जीवन में वही अंधकार बना रहे। क्या चाहेंगे आप? वर्तमान समय चारो ओर दुःख अशांति के अंधकार में घिरा मानव कहीं रोशनी की चिंगारी भी देख नहीं पाता, पर आज के संसार के हालात को हम देखते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि ज़रूर अभी परमात्मा के आने का समय है। कहते हैं ना, यदा यदाहि धर्मस्य...। हम चारो तरफ देख भी रहे हैं और समझ भी रहे हैं, लेकिन निकलें कैसे? उसके लिए आप अपने नज़दीकी ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेन्द्र में आकर परमात्म ज्ञान को समझें और अपने जीवन की प्रयोगशाला में प्रयोग कर इसे अपनायें।

निश्चय बुद्धि विजयंती, ज़रा भी संशय या क्वेश्चन न हो

एक बारी साकार में बाबा ने मुझे कहा कि जितना तुम मुझे याद करोगी, उतना बाबा तुम्हारे साथ रहेगा। अगर मैं कहूँ कोई मेरी ग्लानि करता है, कुछ भी करता है तो ज़रा सी फीलिंग आई, चेहरे पर आई, यह गलत है। ऐसी गलतियां करते रहने से न दुआ ले सकेंगे, न दुआ दे सकेंगे, इसलिए बाबा कहता है याद करो तो विकर्म विनाश हो जावे, पर यदि विकर्म बन गया तो वो विनाश कैसे होगा? कहेंगे यह पूर्व जन्मों का कोई हिसाब किताब नहीं, ऐसा मुझे लगता है, शरीर में आत्मा को खुशराज़ी रहना है, इसलिए शरीर में बैठी है। मैं तीन बारी ओम् शांति किसलिए कहती हूँ, यह सारे देश विदेश में मशहूर हो गया है। मैं हूँ आत्मा, मेरा है परमात्मा। मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, मेरा स्वधर्म शान्त है। धरत परिए धर्म न छोड़िए। मुझे क्या करने का है? जैसे भगवान चलाता है वैसे चलते रहना है।

यह जीवन मरजीवा जन्म है, जीते जी मरना। ज़रा भी लौकिक का भान उनसे नहीं आयेगा, यह फलाने की बेटी है या बहन है या फलाना है, कोई नहीं। न नाम, न रूप, न देश...। जहाँ भी होंगे, कहेंगे हम तो मधुबन निवासी हैं ना। जब से बाबा ने यज्ञ की स्थापना की, तब से साइंस ने भी विनाश की तैयारी करना शुरू कर दिया। तभी से इन्वेन्शन होने लगे, नहीं तो यह बिजली आदि पहले नहीं थी। अभी यह माइक रखा है, यह लाइटें हैं... यह सब साइंस की कमाल है। परंतु साइंस विनाश काल नज़दीक ला रही है, तो सारी दुनिया में यह आवाज़ पहुंचना चाहिए, विनाश काले निश्चय बुद्धि विजयंती, ज़रा भी संशय न हो, क्वेश्चन न हो। इतना अच्छा ड्रामा का ज्ञान होते भी कोई प्रकार का क्यों, क्या, कैसे होगा..., मुख ऐसे बोले, अभी यह अच्छा नहीं लगता है, शोभा नहीं देता है। इसमें तुम्हारा क्या जाता, तुमको जो करना है सो कर लो। यह सेल्फिश नहीं है पर सच्ची दिल है। जो पुरुषार्थ करेंगे ऑटोमेटिकली दूसरे को ऐसा पुरुषार्थ करने का दिल से उमंग आयेगा। गोप गोपियों, पुरुषार्थियों को खुशी न हो, तो मज़ा नहीं है। बाबा को फॉलो करना, बाबा जैसे सिखाता है, न किसी को दुःख दो, न लो। कभी भी दुःख न लो।

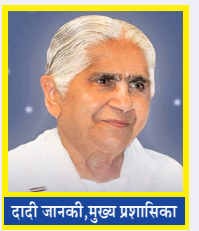

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

अपनी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति... जैसा अंदर सिमरण होता है, वैसी वृत्ति होती है, वैसी दृष्टि होती है। कितना सुख मिलता है, बाबा गोद बिठाके, गले लगाके पलकों पर बिठाके ले जा रहा है। पहले ऐसे दृष्टि देने-लेने का ज्ञान नहीं था, पर शान्ति बाबा में ऐसी थी, एकदम आत्मा शान्त हो जाती थी याद में। बाबा शान्ति का सागर है, शान्तिधाम में जाना है। अभी अभी जाना है, उसके लिए तैयार बैठे हैं। दीदी को कुछ भी बोलते तो कहती थीं, अब घर जाना है, अब घर जाना है। तो जो शब्द हमारे दीदी-दादियों के रहे हैं, वही अभी हमारे भी हों।

हर कर्म करते आत्मिक स्मृति रहे

शिव बाबा कहते हैं कि अन्त में एक सेकण्ड का पेपर होगा- स्मृतिर्लब्धाः, नष्टोमोहा। कर्मेन्द्रियों से सुनने, देखने, बोलने और सोचने का भी तो मोह होता है। नष्टोमोहा माना सम्बंधियों या वैभवों से, चीज़ों से ज़रा भी मोह नहीं। अपने शरीर की कोई भी कर्मेन्द्रियाँ अगर खींचती हैं माना मोह है, उससे प्यार है। तो नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप कैसे होंगे? तो इसके लिए एक सहज अभ्यास है कि हम चाहे कितने भी बिज़ी रहते हैं, लेकिन ये स्मृति हर पल रहे कि मैं आत्मा मालिक इन कर्मेन्द्रियों से यह काम करा रही हूँ। जैसे कोई डायरेक्टर, बॉस होता है- वह अपने ही कमरे में एक कुर्सी पर बैठा रहता है। परंतु उसको यह नैचुरल याद रहता है कि मैं डायरेक्टर हूँ, यह कर्मचारी जो भी मेरे साथी हैं उनसे कराने वाला हूँ। मैं ज़िम्मेवार हूँ। यह तो याद रहता है ना। ऐसे यह भी याद रहे कि मैं आत्मा करावनहार हूँ और यह कर्मेन्द्रियाँ जो हैं, मेरी कर्मचारी हैं यानि साथी हैं। मददगार तो यह कर्मेन्द्रियाँ ही हैं। लेकिन मैं मालिक हूँ, कराने वाला हूँ। मालिक कहने से आत्मा अलग हो जाती है, शरीर अलग हो जाता है। यह प्रैक्टिस हम बीच-बीच में काम करते भी करें, यह नशा रखें कि मैं आत्मा करावनहार हूँ या मैं आत्मा मालिक हूँ। मालिकपन आयेगा तो न्यारापन ऑटोमेटिक होगा। कराने वाला मैं हूँ और यह करने वाली हैं तो डायरेक्शन से ज़रूर चलेंगे। अगर कोई डायरेक्शन प्रमाण नहीं चलते हैं तो समझेंगे कि यह तो नहीं चल सकेगा। तो कर्म छोड़कर नहीं, लेकिन कर्म करते हुए यह याद करना है कि मैं कराने वाली आत्मा मालिक हूँ, यह कर्मेन्द्रियाँ अलग हैं, फिर कंट्रोल करना सहज है। यदि मालिक को मालिकपन ही याद नहीं होगा तो सर्वेन्ट मानेगा कैसे। कम्पनी के डायरेक्टर जो होते हैं वह अपने वर्कर्स को कितना बिज़ी रखने की कोशिश करते हैं, तो मैं भी मालिक हूँ तो इन कर्मेन्द्रियों को क्यों नहीं बिज़ी रखूँ। दूसरा मैं मालिक हूँ तो विदेही यानि देह से न्यारे का अभ्यास नैचुरल होता जाता है। कर्म करते हुए यह अभ्यास करते रहो तो आपका लिंक जुटा रहेगा। और लिंक जुटा हुआ होने के कारण फिर जब आपको फुर्सत मिलती है उस समय आप विदेही बन जाओ। लेकिन विदेही मतलब यह नहीं है कि चींटी ऊपर चढ़े तो पता ही नहीं पड़े। लेकिन जैसे कोई बहुत डीप विचार में होते हैं, कोई बात में बहुत रूचि होती है सुनने की, देखने की तो उस समय बाहर कुछ भी होता रहे फिर भी हमारा अटेन्शन नहीं जाता है। समझो मैं खाना खा रही हूँ और मेरा कुछ विचार चल रहा है, जिसमें मेरा पूरा ध्यान उसी विचार में है तो खाना तो मैं मुख में ही डाल रही हूँ, लेकिन अगर कोई मेरे से पूछे कि आज नमक ठीक है? तो आप जवाब नहीं दे सकेंगे क्योंकि आपका विचार जो है वह दूसरे तरफ इतना डीप था जो आपने खाया भी लेकिन खाते हुए भी आप न्यारे रहे। ऐसे ही अगर हम देह में होते हुए अपने ही मनन चिंतन में हैं, मालिकपने के नशे में हैं तो मुझे यह कर्मेन्द्रियाँ क्यों आकर्षित करेंगी? नहीं कर सकती हैं। इसमें काम को छोड़ने की बात नहीं है। काम करते हुए मालिकपन चाहिए। तो कर्म भी अच्छा होगा और विदेहीपन का अभ्यास भी पक्का होता जायेगा। एकान्त में इसका अभ्यास और अच्छी तरह से कर सकते हैं। भिन्न-भिन्न स्वमान का नशा और खुशी रहे तो भी मालिकपने की स्मृति और पक्की होती जायेगी। और इससे याद ऑटोमेटिकली आ जायेगी, क्योंकि जितना आप मालिकपन में रहेंगे तो कर्मेन्द्रियां धोखा नहीं देंगी। और मैं आत्मा हूँ, यह पक्का होता जायेगा। मालिक हूँ, आत्मा हूँ। तो शिवबाबा की याद बहुत सहज हो जायेगी, क्योंकि मैं भी अशरीरी वह भी अशरीरी। बीच में पर्दा है यह शरीर का, इसलिए योग नहीं लगता है। और जब मैं आत्मा मालिक अशरीरी हूँ और बाबा भी अशरीरी है तो एक जैसे हो गये। तो कनेक्शन बहुत जल्दी हो जायेगा यानि योग जल्दी लग जायेगा। जब देह से अलग होते जायेंगे, होते जायेंगे तो वैराग्य क्या बड़ी बात है। मालिकपने के नशे और खुशी के रस के आगे यह जो भी लगाव की चीज़ें हैं वह ऐसी लगेंगी जैसे बिल्कुल फीकी हैं, कुछ भी नहीं हैं। और अलग अलग मेहनत करने से बच जायेंगे।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

हो आत्मसम्मान, तो सब देंगे सम्मान

दुनिया में कहा जाता है, तुम प्यार करो तो सब करें। कहते मैं तो सबको प्यार देता, लेकिन आगे वाला मुझे ठुकराता। इसमें हमेशा समझो यह मेरा हिसाब-किताब है। 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करना है। जहाँ प्यार होगा वहाँ सब मान देंगे। शुभ भावना रहेगी, शुभ चिंतन चलेगा फिर उनके लिए मेरा वरदान रहेगा। अगर मैं इस स्थिति में रहूंगी तो सब मेरी स्तुति करेंगे। अगर मैं ही अपनी स्थिति में नहीं रहती तो कोई मेरी क्या स्तुति करेगा।

हरेक अपने से पूछे- पहले मेरी स्तुति मेरे 8 मंत्री 'कर्मेन्द्रियां' करते हैं? जो मुझ आत्मा का संस्कार है वह संस्कार मेरी स्तुति करता है? जब मेरा संस्कार मेरी स्तुति करे, अर्थात् ऑर्डर में रहे तब दूसरे भी स्तुति करेंगे। बाबा ने कहा 3 मंत्री हैं मुख्य। मन बुद्धि और संस्कार। तो मेरा मन सदा मेरे चरणों में रहता अर्थात् मैं जो पवित्र आत्मा हूँ, मेरा मन सदा ऐसा ही स्वच्छ पवित्र और सदा ऊँचा रहता है? मेरा पहला मंत्री मेरे ऑर्डर में है? ऑर्डर में है तो शुद्ध संकल्प स्वतः रहेंगे। फिर यह क्यों आता मेरा यहाँ अपमान हुआ! यह संकल्प उठाना भी तो अशुद्धता है। अपने से पूछो मैं अपनी महानता की ऊँची स्थिति पर रहता हूँ? जब मैं उसी स्थिति पर रहूंगी तब सभी मेरा मान करेंगे। कई कहते हैं मेरी वृत्ति अच्छी नहीं, मेरी वृत्ति चंचल होती है, अगर मैं यही रिपोर्ट करती तो मैं दूसरे से क्या मान मांगूँ? पहले तो अपनी रिपोर्ट बंद करो। तुम पहले अपने मंत्री से तो प्यार पाओ, पीछे दूसरे से मांगो। अगर वृत्ति चंचल है माना मंत्री कंट्रोल में नहीं है। कहते हैं दक्ष प्रजापिता ने यज्ञ रचा। अब दस शीश वाले रावण को स्वाहा करने के लिए हमारे बाबा ने यह रूद्र यज्ञ रचा है। इसमें ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बच्चों ने अपना सब कुछ स्वाहा कर दिया। तो हरेक पूछे मैंने अपने दस राक्षसों को स्वाहा किया है? इन्द्रियजीत बनने का मतलब है अपनी कर्मेन्द्रियों को दिव्य बनाना। तो चेक करो कि मेरे कान दिव्य बने हैं? या अभी तक कनरस सुनने का शौक है? परचिंतन पतन की ओर ले जयेगा। फिर ऐसा परचिंतन वाला मान पा सकता है? हमारे यह नयन दूसरे को प्यार की भावना से, भाई-भाई की दृष्टि से, बाबा के रत्न देखने के लिए हैं। अगर यह नयन बुरी दृष्टि से देखते, द्वेष की दृष्टि से देखते तो क्या यह नयन मुझे मान देंगे। अगर नयनों ने बुरे नज़र से देखा, द्वेष दृष्टि डाली तो मेरे नयन ही मुझे अपमानित करते। दुःख देते, फिर दूसरे से मान कैसे मिलेगा।

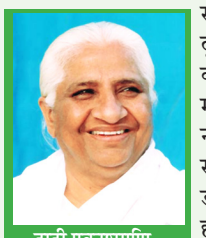

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

कहते यह मुझे इतना प्यार नहीं देता। मैं पूछती तुमने अपने को कितना प्यार किया? मैं अपने संकल्प को शुद्ध रखूंगी तो प्यार मिलेगा। मेरी बुद्धि अगर परचिंतन में घूमती, सत्यता को छोड़, स्वच्छता को छोड़ असत्यता की ओर जा रही है तो पहले मेरी बुद्धि ने ही मुझे प्यार नहीं दिया। अगर बुद्धि ही प्यार नहीं करती तो दूसरे क्या करेंगे। पहले देखो : मेरे संस्कार मुझे सिस्पेक्ट देते हैं? मैंने अपने संस्कारों की चंचलता को स्वाहा किया है? अगर मेरे संस्कार ही मुझे रिस्पेक्ट नहीं देते तो दूसरे क्या देंगे।